

Shri Raghunath Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ९६४-घ

Title रुद्रमाला तन्त्रोपनाहा प्रदीपिका

Author

Extent ४ Age

Subject तन्त्र

ज्वाला मुखी स्तोत्रम्

१७४

! श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ उं नकारे विजया देवी सदा
देवयदायनी॥ नकारे स्मृते पापं ज्वाला मुखी न
मो स्मृते॥ ३॥ नवकोटी श्वाभुंजा कामाद्या काम
रूपिणि॥ चंडभुंज हयानित्वा ज्वाला मुखी नमो
स्मृते॥ २॥ कराली कलिनी काली कालरात्री त्रा
सलीनी॥ नद्रकाली कराली च ज्वाला॥ ३॥ म
रुमाया च वृंदवी महादेवनि कंदनी॥ खड्गश
क्तिधरा देवी ज्वाला॥ ४॥ नवदुर्गा मेरु काली

महीपासुरवेदनी॥ प्रचंडरूपगिदेवा ज्वा
 ला॥ १॥ शुंननी शुंनरुंती चरक बीजशो
 षणी॥ कासी कापांगारुस्तेषु ज्वाला॥ २॥ हुं
 महाविद्या महास्त्री यदामांगी लघुरूप
 गि॥ मधुकैटभरुं न्यासी ज्वा॥ ३॥ क
 मांगी धम्मचारिणि रुद्ररूपि नयं करी॥
 कसराहीसी नस्म कात्याच ज्वा॥ ४॥ ठी
 शाकं नरविक्रं गीत्रपुरा मोचतारिणि

॥ ५॥
 ॥ ६॥

त्रीहारात्रीश्वरान्तवाचज्वाला॥११॥ नील
 ननेदनीदेवी-अष्टसिद्धिमाशुबला॥१२॥
 सापुंथानीपातिचज्वाला॥१३॥-आकाश
 त्वंचदेवीसापातालेभुवनेश्वर॥१४॥ मृत्युलो
 कैचत्वंदेवीसापातालेज्वाला॥१५॥ श्वे
 तारक्तानथास्यानाअनेकरूपधरिणी
 ॥१६॥ देव्यानामदिनत्वाचज्वाला॥१७॥ चते
 युगेचत्वंदेवितानापाजनकास्वती॥१८॥ दे

वापुरे दोपती देवी जाला ०॥१३॥ मेषराशि च
लं देवी आदिना धानकन हा ॥ अष्टश्र
ॐ नयोगेषु ज्वाला ०॥१४॥ गायत्री सान्
सावित्री सारदा हंसवहनि ॥ सुमरलेवे
दधरा देवी ज्वाला ०॥१५॥ आरूढारूपी
या देवी जालंधरनी वासीनी ॥ चतुर्षष्टि
समारूढी ज्वाला ०॥१६॥ गणपंधर्वसिधा
नां सुतर्जनी सदादिनी ॥ ततो देवी प्रसा

रामा

१२

देन ज्वाला ॥ ७ ॥ विद्यार्थिन ते विद्यां धना
 र्थिन ते धनं ॥ पुत्रार्थिन ते सुत्रं मोक्षार्थ
 र्थिन ते गतिः ॥ १४ ॥ दालिद्रि मुक्तिमाप्नो
 तिः कुष्ठदेवा धनासिनी ज्वाला सुप्रसादे
 न विमुक्तनात्र संशयः ॥ १५ ॥ इति तत्र प्रत्न दत्ते
 देवी अथ पुत्रप्रदायिनी ॥ राज्ञ्यं नीकं टकं देवी
 ही सुपुत्रेन जते सदा ॥ १६ ॥ निकाममोष्यदा
 देवी देहमेवावरां कुरु ॥ तम च देहि धरात्वां

3

च बुद्धिविधा सुषाना च ॥ २१ ॥ रा उपं दारे च सं
 सामेः नदि नारे च संकटे ॥ ज्ये सु मति नग
 ते नि त्पा स व त्र वि ज्ञ या न वे त् ॥ २२ ॥ नी त्प
 मे व प्र भा वे न जे सु मति भि मा न वा ॥ वां ष्ठा
 ती थ फि ल सि धि प्रा प्ते ये ना त्र शं स यः ॥ २३ ॥
 ज न्मा दि च क्र तं पा पं स व सा र दि ना नि च ॥
 ज्वा ला स्त व प्र सा दे नु च्य ते स व क्वा त्वा षं
 ॥ २४ ॥ का शि म्मा स पु ह्ये च सु ग मे कं प्र थो

राम ॥
 ॥ २५ ॥

